ISSN: 2393-8900 IMPACT FACTOR : 2.7825(UIF) VOLUME - 8 | ISSUE - 6 | FEBRUARY - 2022

HISTORICITY RESEARCH JOURNAL

बैरसिया में सन् 1857 ई. का क्रांतिकारी सुजाअत खाँ

डॉ. रामबाबू मेहर

सहायक प्राध्यापक (इतिहास)

शासकीय गृहविज्ञान स्नातकोत्तर महाविद्यालय, होशंगाबाद मध्यप्रदेश

वर्तमान में भोपाल जिले की एक तहसील बैरसिया, भोपाल से उत्तर में लगभग 42 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। मुगलकाल में, अकबर के समय बैरसिया, मालवा सूबा तथा रायसेन सरकार के अन्तर्गत आता था।[1] सूबा मालवा में 1579–80 ई. से लेकर 1604–05 ई. तक कुल ग्यारह मुगल सूबेदार रहे।[2] मुगलों के बाद बैरसिया मराठों, पिंड़ारियों और धार के राजाओं के आधिपत्य में रहा। भोपाल राज्य का संस्थापक सरदार दोस्त मुहम्मद खाँ मुगलों की नौकरी छोड़कर रियासत सीतामऊ (मालवा) के राजा केशोदास के यहाँ नौकरी करने लगा। इसके बाद वह ठाकुर आनंद सिंह की रियासत मंगलगढ़ (1708–1709 ई.) आ गया जो कि भोपाल से उत्तर में लगभग 71 किलोमीटर की दूरी पर, बैरसिया–नरसिंहगढ़ मार्ग पर है।

इस समय बैरसिया, जो मुगलों की रायसेन सरकार के तहत एक परगना था, में ताज मुहम्मद खाँ मुगलों का हाकिम था। दोस्त मुहम्मद खाँ ने सन् 1707 ई. में 30000 हजार रूपयों में मुगलों से बैरसिया प्राप्त कर लिया।[4] इसके बाद दोस्त मुहम्मद खाँ ने शीघ्र ही अपनी स्थिति मजबूत कर पड़ोसी क्षेत्र जगदीशपुर, (जो वर्तमान में इस्लामनगर के नाम से जाना जाता है और भोपाल से उत्तर में लगभग 12 किलोमीटर पर एक छोटा सा गाँव है) पर आक्रमण कर उसे जीत लिया। यही जगदीशपुर बाद में स्वतंत्र भोपाल राज्य की प्रथम राजधानी बना।

बैरसिया भोपाल रियासत के जिला निजामत–ए–मगरिब (पश्चिमी जिला) के तहत एक तहसील था[5] जिसके अन्तर्गत आस–पास के कुछ गाँवों की व्यवस्था की जिम्मेदारी थी। दोस्त मुहम्मद खाँ के वंशज नवाब नजर मुहम्मद खाँ व अंग्रेजों के मध्य 1818 ई. में जो रायसेन की संधि[6] हुई उसके अनुसार एक पॉलिटिकल ऐजेंट का भोपाल में रहना निश्चित हुआ और उस पॉलिटिकल ऐजेंट का एक पॉलिटिकल अस्सिटेंट, सुब्बाराय नामक व्यक्ति 1857 ई. के समय प्रशासनिक कार्यो की देखभाल के लिये बैरसिया तहसील में रहता था।

यह वह समय था जब अंग्रेजों की शोषणकारी नीतियों के खिलाफ देश में बढ़ रही उत्तेजना 10 मई 1857 ई. को विद्रोह के रूप में, मेरठ में क्रांति की ज्वाला बनकर प्रस्फुटित हुई और शीघ्र ही दिल्ली तथा आसपास के क्षेत्रों में फैल गई। यह देश में अंग्रेजी शासन के विरूद्ध तीव्र गुस्सा था। साथ ही जो देशी रजवाड़े अंग्रेजों के साथ संधियों के कारण, लाभ–हानि को देखकर अंग्रेजी राज से चिपके थे, स्थानीय स्तर पर उनके खिलाफ भी बगावतें होने लगी थीं। 1857 ई. की बगावत के दौर में भोपाल रियासत में नवाब सिकंदर जहाँ बेगम, 9 साल की अल्पवयस्क पुत्री शाहजहाँ की रीजेंट थीं।[7]

भारत में अंग्रेजों द्वारा किये गये निरंतर शोषण ने जनता को अत्यधिक प्रभावित किया था। इसके अतिरिक्त विदेशी कारखानों में उत्पादित माल का बड़ी मात्रा में भारतीय बाजारों में आ जाने से स्थानीय व्यापार–वाणिज्य तहस–नहस हो गया, इससे देश की स्थिति दयनीय हो गई थी। अंग्रेजी नीतियों ने जागीरदारों, ताल्लुकेदारों और वंशानुगत भू–स्वामियों को नेस्तानाबूत कर दिया था। किसान खेती से भागने लगे थे। ताराचंद

ने इसी तरह की अंग्रेजी भूमि–कर व्यवस्था को क्रांति का कारण माना है।[8] इसी के साथ ही भारतीयों के धर्म में अनावश्यक हस्तक्षेप करना, जिससे यह माना जाने लगा था कि अंग्रेज धर्म में हस्तक्षेप कर देश को ईसाई बनाना चाहते हैं। अतः देश के अधिकतर भागों में अंग्रेजों को बाहर करने के लिये हथियारबंद संघर्ष प्रारंभ होने लगे थे। इसका प्रभाव धीरे–धीरे ही सही, अन्य क्षेत्रों में दिखाई देने लगा था।

भोपाल रियासत में भी जनता अंग्रेजी सरकार की इसी तरह की नीतियों से प्रभावित हो रही थी। इसी समय रियासत की बेगम सिकंदर जहाँ ने कृषि से संबंधित एक फरमान जारी किया, जो अंग्रेजी प्रभाव को इंगित करता था। इस फरमान के पूर्व भोपाल में 1857 ई. तक सिपाहियों को कृषि भूमि पट्टे पर लेने का अधिकार था, लेकिन नवाब सिकंदर बेगम ने नये बंदोबस्त के साथ इस अधिकार को समाप्त कर दिया। इससे सैकड़ों सिपाही प्रभावित हुये। इस कारण सिपाहियों में रियासत के खिलाफ असंतोष उत्पन्न हो गया।[9] देखते ही देखते भोपाल में भी अंग्रेजों और रियासत के खिलाफ वातावरण बन गया। भोपाल में गाँव–गाँव भेजी जाने वाली चपातियों ने जनता तथा सिपाहियों में क्रांति की चिंगारी को भड़काने का काम किया। इन परिस्थितियों में, मेरठ में बगावत के तीन माह बाद ही भोपाल कन्टिनजेंट के बागी सिपाहियों ने वलीशाह के नेतृत्व में अंग्रेजी राज के खिलाफ क्रांति का झड़ा बुलंद कर दिया।[10] भोपाल कांटिन्जेंट की स्थापना ऊपर वर्णित रायसेन की संधि द्वारा हुई थी, जिसका संपूर्ण व्यय भोपाल रियासत उठाती थी, इसी कांटिन्जेंट की एक वटालियन और अश्वारोही दल बैरसिया में पदस्थ था। बैरसिया में पदस्थ सहायक पॉलिटिकल ऐजेंट सुब्बाराव फौज के अतिरिक्त प्रशासकीय कार्यो को भी देखता था। यहाँ सुब्बाराव की सहायता के लिये एक सहायक, मुंशी मखदूम बख्श कार्यरत था। दिल्ली की क्रांति की खबरों ने इनकी चिंता को बड़ा दिया था, क्योंकि चारों ओर अंग्रेजी हुकूमत व उनके समर्थकों के विरूद्ध स्थितियां तेजी से बदल रहीं थीं।

रियासत के भीतर कुछ समय में ही क्रांति के चार केन्द्र उभर गये थे, जो इस प्रकार थे–पहला सीहोर, जहाँ वलीशाह, महावीर कोठ और आरिफशाह थे, दूसरा बैरसिया, जो सुजाअत खाँ, कामदार खाँ और सरफराज खाँ की क्रांति का मुख्य क्षेत्र था, तीसरा गढ़ी–अंबापानी, यहाँ दो भाई फाजिल मुहम्मद खाँ एवं आदिल मुहम्मद खाँ थे, और चौथा केन्द्र छीपानेर था जिसका नेतृत्व ठाकुर दौलत सिंह (देवास के पास एक छोटी रियासत का राजा) कर रहे थे। इसी समय इन्दौर में तैनात भोपाल कान्टिन्जेंट के एक दस्ते से कुछ सिपाही बिना कारण बताये सीहोर बापिस आ गये, और वे खुलेआम अंग्रेजी शोषण के खिलाफ बगावती तेवरों का प्रदर्शन कर दूसरे सिपाहियों को तैयार करने लगे। इससे रियासत में वातावरण नाजुक हो गया। इन सिपाहियों पर बेगम कार्यवाही चाहती थी, लेकिन सिपाही महावीर कोठ एवं सिपाही रमजूलाल की लोकप्रियता के कारण ऐसा करना संभव नहीं हुआ। इस घटना से क्रांतिकारियों के होंसले बुलंद हो गये। अब उन्हें बिट्रिश राज को उखाड़ फेकने का रास्ता मिलता नजर आने लगा था। डब्ल्यू. मालेसन इंटेलिजेंस रिपोर्ट में अपुष्ट जानकारी के आधार पर कहता है कि बैरसिया के विद्रोही टोंक के विद्रोहियों से मिले हुये थे और उनके बीच कुछ गुप्त सूचनाओं का आदान–प्रदान हो रहा था। (डब्ल्यू. मालेसन दि रिवोल्ट इन सेंट्रल इन्ड़िया 1857–59, कम्पाइल्ड इन दि इंटेलिजेंस ब्रांच, शिमला, 1908, पृ. 68)

सुजाअत खाँ की कार्यवाही

बैरसिया में हालात दिनों–दिन बिगड़ रहे थे। दिल्ली में क्रांति की खबरों के मध्य 10 जुलाई 1857 ई. को सीहोर से होशंगाबाद भागते समय अंग्रेज पालिटिकल एजेंट ने कमांड़र–इन–चीफ को खत से सूचना भिजवाई कि बैरसिया के हालात ठीक नहीं हैं, अतः दो अधिकारी व 12 सिपाही बैरसिया की सुरक्षा हेतु तैनात करें, इसके तीन दिन बाद ही 13 जुलाई 1857 ई. को मुंशी बैजनाथ से कहा गया कि वह कस्बा बैरसिया के कोष व कारागार की सुरक्षा हेतु तीस सिपाहियों का एक मजबूत दल भेजे,[11] लेकिन एक घटना ने बैरसिया में क्रांति की दिशा को बदलने का कार्य किया। 13 जुलाई 1857 ई. को सुब्बाराव ने एक सिपाही के साथ दुर्व्यवहार कर दिया और बातचीत के दौरान उस सिपाही को पीट दिया जिससे वह लहूलुहान हो गया। जब ये सिपाही जख्मी हालात में बस्ती में आया और अपनी पिटाई का हाल सुनाया तो बस्ती में उत्तेजना फैल गई।

सुजाअत खाँ ने इस अपमान का बदला लेने के लिये, बगावत को उठ खड़े हुये, लोगों का नेतृत्व करने की सौगंध ली, क्रांति का झंड़ा उठाया और कस्बा बैरसिया पर अपना शासन घोषित कर दिया। भोपाल रियासत में सबसे पहले बैरसिया में ही बगावत हुई थी। सुजाअत खाँ ने 14 जुलाई 1857 ई. को बैरसिया रियासत के अधिकारियों पर हमला बोल दिया और सुब्बाराय व उसके सहायक मुंशी मख़दूम बख्श की हत्या कर दी।[12] इस

कार्यवाही के बाद सुजाअत खाँ के आदमियों ने अंग्रेज अफसरों के घरों को आग लगा दी। जितने अंग्रेज उस समय मिले सभी को मार डाला।[13] सुजाअत खाँ के भाई कामदार खाँ ने बैरसिया के संरक्षित कोष को लूट कर उस पर कब्जा कर लिया।[14]

इस घटना से क्रांति का केन्द्र बैरसिया चर्चा का विषय बन गया। यह रियासत और अंग्रजों को सीधी चुनौती थी। रियासत में चारों ओर अंग्रेजी हुकुमत के विरूद्ध क्रांतिकारी इक्ट्ठा होने लगे। सभी क्रांतिकारी एक–दूसरे से संपर्क करने लगे। अब क्रांतिकारियों को जनता की सहानुभूति भी मिलने लगी। एक घटना और घटित हुई कि भोपाल कांटिन्जेंट की एक टुकड़ी बैरसिया में तैनात थी और जिसमें 70 सिपाही थे, जैसे ही सुजाअत खां ने अंग्रेजी जुल्म और रियासत भोपाल के खिलाफ जंगे–एलान किया, ये सारे सिपाही उसके क्रांतिकारी झंड़े के नीचे आ मिले। (डब्ल्यू. मालेसन, दि रिवोल्ट इन सेंट्रल इन्ड़िया 1857–59, कम्पाइल्ड इन दि इंटेलिजेंस ब्रांच, शिमला, 1908, पृ. 68)

अब क्रांति को धार मिलना स्वभाविक था, क्योंकि एक अच्छी लड़ाई के लिये प्रशिक्षित सिपाहियों की आवश्यकता होती है, वह यहाँ पूरी होती दिखने लगी थी। इसी दौरान बैरसिया छावनी के परेड ग्राउण्ड में अभ्यास के समय तोपचियों ने तत्समय् मौजूद अधिकारियों को तोपों से उड़ा दिया। ये तोपें कुछ दिनों पहले ही विद्रोहियों पर नियंत्रण के लिये भोपाल से लाई गईं थीं। अतः इससे हालात और बिगड गये,[15] और अब लगने लगा था कि यह क्रांति रुकने वाली नहीं है।

बगावत की खबर बेगम सिकंदर जहाँ को प्राप्त हुई तो बेगम ने अगले दिन 15 जुलाई को रहीम खाँ के नेतृत्व में भोपाल आर्मी को बैरसिया की बिगडती स्थिति पर नियंत्रण करने और स्थिति न सम्हले तो आक्रमण करने का हुक्म दिया। जो फौज रहीम खाँ के नेतृत्व में बैरसिया पर हमला करने भेजी गई उसके अधिकतर सिपाही, फौज के एक अन्य सिपाही बलवंत सिंह के नेतृत्व में सुजाअत खाँ से जा मिले।[16] इससे स्थिति सम्हलने की अपेक्षा और बिगड़ गई। अब बेगम ने सुजाअत खाँ के विरूद्ध कठोर कदम उठाने का रास्ता अपनाया। बेगम ने भोपाल कांटिन्जेंट को बैरसिया के विद्रोहियों पर हमला करने का आदेश दिया, परंतु कांटिन्जेंट के सिपाहियों ने बैरसिया जाने से मना कर दिया।[17] अब बेगम के खिलाफ खुली बगावत का बातावरण हो गया। जिस अधिकारी ने बैरसिया पर हमला करने से इनकार किया था, वह सीहोर छावनी का महावीर कोठ था। जिसका उल्लेख पूर्व में किया जा चुका है। स्तिथियाँ बिगडती जा रही थीं और बेगम की बैरसिया पर पकड़ भी कमजोर हो रही थी।

निर्भय सिंह, जो कि भोपाल रियासत की ओर से, बैरसिया में तेनात एक अधिकारी था, नवाब बेगम को पत्र से सूचित करता है कि अगरा–जागीर[18] का राजा छत्रसाल बैरसिया पर कब्जा करने की फिराक में है। ऐसी ही सूचना सेठ राजधर लक्मीचंद के पत्र से भी मिली है कि पिंडारियों ने बैरसिया पर कब्जा कर रखा है और छत्रसाल इनको भगाकर बैरसिया पर स्वयं अधिकार करना चाहता है[19] और यदि ऐसा हो जाता है तो फिर से बैरसिया को प्राप्त करना कठिन हो जायेगा। इधर क्रांतिकारियों की शक्ति में लगातार वृद्धि हो रही थी, उधर पॉलिटिकल एजेंट निरंतर बेगम पर दबाब डाल रहा था कि कैसे भी हो बैरसिया को सुजाअत खाँ के कब्जे से मुक्त कराया जाये।

पॉलिटिकल एजेंट के पत्र के उत्तर में बेगम ने उसे आश्वस्त करते हुये लिखा कि 'मैं स्वयं प्रयास कर रही हूँ और जैसे भी संभव होगा बैरसिया को सुजाअत खाँ के कब्जे से आजाद करवाया जायेगा, परंतु यहाँ की सेना की जो स्तिथि है उससे आप परिचित हैं, जहाँ तक भोपाल की जनता का संबंध है, वह आमतौर पर अंग्रेजों से बेजार (परेशान) हो चुकी है। जनता की यह बेजारी इस हद तक बढ़ गई है कि भोपाल के कहार और चरकटे भी अंग्रेजों का नाम सुनना पसंद नहीं करते।[20] बेगम के इस पत्र से सहज अंदाजा लगता है कि नवाब बेगम क्रांतिकारियों के आगे बेबस थी और भोपाल रियासत में परिस्थितियाँ कितनी गंभीर रूप ले चुकीं थीं।

सुजाअत खाँ का कई दिनों तक बैरसिया में कब्जा रहा। इस दौरान उसने अपनी फौज में बढ़ोत्तरी कर ली और एक तरह से बैरसिया में बेगम के शासन के समानांतर शासन स्थापित कर लिया। बैरसिया के खजांची धनसिंह द्वारा बेगम को लिखे पत्र से मालूम होता है कि दिन–व–दिन बैरसिया की स्थिति बहुत खराब हो रही थी। वह आशंकित होकर बेगम को लिखता है कि जैसे सुब्बाराब को विद्रोहियों ने कत्ल कर दिया था, उसी तरह उसे भी कत्ल किया जा सकता है। ऐसे हालात में अपराधियों को पकड़ना, लूटे गये माल को वापिस पाना और सुब्बाराव की सम्पत्ति को तलाशना असंभव है।[21]

नबाब सिकंदर जहाँ बेगम की कार्यवाही

रियासत की नियंत्रणकारी कार्यवाहियों ने क्रांतिकारियों को धीरे–धीरे कमजोर कर दिया। बेगम ने एक चाल चली और 28 जुलाई 1857 ई. को अपने एक विश्वसनीय बैजनाथ नामक एक व्यक्ति को छुपाकर बैरसिया पहुँचा दिया। बैरसिया पहुँच कर बैजनाथ ने सबसे पहले वहाँ के एक स्थानीय चौधरी निर्भय सिंह की मदद ली और षड़यंत्रपूर्वक एक दिन अपने कुछ सिपाहियों के साथ सुजाअत खाँ पर अचानक हमला कर दिया। इस अकस्मात हुए हमले में सुजाअत खाँ और उसके अन्य साथी किसी तरह अपनी जान बचाकर भाग निकले।[22]

इस अकस्मात और बुजदिली के आक्रमण से क्रांतिकारी भागने में तो सफल रहे, किंतु उनकी शक्ति कमजोर हो गई। इसका कारण था कि कांटिन्जेंट के सिपाहियों के स्थान पर रियासत की आर्मी को बैरसिया पर नियंत्रण के लिये लगाया गया था। साथ ही बेगम ने अपनी पड़ौसी रियासतों से सहायता की अपील भी की कि वे भोपाल रियासत में आये इस संकट में उनकी मदद करें! अपील का खासा प्रभाव हुआ। बैरसिया के पश्चिम में स्थित नरसिंहगढ़ रियासत से बेगम को सहायता प्राप्त हुई। नरसिंहगढ़ द्वारा पचास सिपाही बैरसिया पर नियंत्रण हेतु भेजे गये। इसी समय सिकंदर बेगम ने एक भावुक अपील की जिसने सीधा असर क्रांतिकारियों से मिल गये सिपाहियों पर किया। बेगम ने कहा कि अंग्रेजों के जाने के बाद रियासत भोपाल भी दिल्ली के बादशाह की सत्ता को स्वीकार कर लेगी, और मैं रियासत में अमन–चैन कायम रखूँगी। इस अपील का व्यापक असर हुआ।[23]

धीरे–धीरे सिपाही विद्रोहात्मक गतिविधियों को छोड़कर रियासत के प्रति वफादार बनने लगे। फिर भी कुछ क्रांतिकारी सितंबर तक विद्रोह में सलंग्न रहे। अब बेगम को एक उम्मीद दिखाई देने लगी थी कि स्थिति पर जल्दी ही नियंत्रण स्थापित हो जायेगा। अतः बेगम के आदेशानुसार जिला कलेक्टरों को हिदायत दी गई कि उन सभी लोगों को पकड़ा जाये जो बैरसिया की लूट और कत्लेआम में सम्मिलित थे। देवराह (दोराहा)[24] के थानेदार को आदेश दिया गया कि बैरसिया के पॉलिटिकल असिस्टेंट बैजनाथ को आवश्यक सहायता मुहैया कराई जाये। साथ ही बैजनाथ की सहायता के लिये दो कंपनियाँ तथा आधा रिसाला भी बैरसिया भेजा गया।[25] इसी तरह के आदेश अन्य अधिकारियों को भी दिये गये।

अब 26 सितंबर 1857 ई. को सीहोर कांटिनजेंट के सूबेदार भवानी सिंह का बैरसिया क्षेत्र में मूवमेंट हुआ। 29 सितंबर 1857 ई. को सुजाअत खाँ से उसकी मुडभेड हुई, जिसमें सुजाअत खाँ हार गये, लेकिन वह अपने साथियों कामदार खाँ, सरफराज खाँ, यार मुहम्मह खाँ और राजा छत्रसाल आदि के साथ भागने में सफल रहे।[26] सुजाअत खाँ ने बैरसिया के समीप पिपलिया गाँव[27] को अपना ठिकाना बनाया, वहाँ भी रियासत की फौज़ के बढ़ते दबाब के कारण अक्टूबर के प्रारंभ में, वे बैरसिया से पश्चिम की ओर नरसिंहगढ़ की तरफ गये, लेकिन कोई सुरक्षित स्थान न मिलने की स्थिति में कुरावर चले गये। वे रियासत के पूर्व में एक और क्रांतिकारी गढ़ी–अंबापानी के जागीरदार फाजिल मुहम्मद खाँ के पास जाना चाहते थे, लेकिन रियासत की फौजों के मूवमेंट के कारण निकलने में असफल रहे। अतः सुजाअत खाँ ने उनके भाई कामदार खाँ को गढ़ी–अंबापानी भेज दिया।

दूसरी ओर बिट्रिश सरकार को यह आशंका भी थी कि नेमावर, छीपानेर, कमालपुर, राघोगढ़ आदि आस–पास के क्षेत्रों में जो विद्रोही सक्रिय हैं यदि शुजाअत खाँ का संपर्क अन्य विद्रोहियों से हो गया तो फिर स्थिति बुरी तरह बिगड़ जायेगी व संभालना मुश्किल होगा। अतः सरकार ने कमालपुर के रघुनाथ सिंह के कामगार को एक पत्र लिखकर बताया कि वह रघुनाथ सिंह को समझाये कि वह शुजाअत खाँ से पत्र व्यवहार न करे और न ही अपने यहाँ ठहराये।[28]

सुजाअत खाँ और साथियों का पकड़ाया जाना व फाँसी

कामदार खाँ को, जो बैरसिया से गढ़ी–अंबापानी के जागीरदार फाजिल मुहम्मद खाँ और आदिल मुहम्मद खाँ के पास इस आशय से सुजाअत खाँ के द्वारा भेजा गया था कि उनको कुछ सहायता मिल जायेगी, लेकिन इससे पहले कि कामदार खाँ मदद प्राप्त करते, 29 अक्टूबर 1857 ई. को सुजाअत खाँ, उनके पुत्र सरफराज खाँ व दामाद को पकड़ लिया गया। सभी क्रांतिकारियों को 25 नवंबर 1857 ई. को अहमदपुर के रास्ते सीहोर लाकर जेल में बंद कर दिया गया। इन क्रांतिकारियों को बिना किसी सुनवाई के, बिना कोई मुकदमा चलाये, 4 जनवरी 1858 ई. की भोर में सीहोर के ईदगाह नामक स्थान पर, महुँआ के एक पेड़ पर फाँसी पर लटका दिया गया।[28] वहीं उसी पेड़ के नीचे दोनों को एक ही कब्र में दफना दिया गया। इससे

भोपाल रियासत में अंग्रेजी राज के विरूद्ध क्रांति का एक जीवंत अध्याय समाप्त हो गया। उधर, 29 जनवरी 1858 ई. के दिन कामदार खाँ को फाजिल मुहम्मद खाँ तथा अन्य क्रांतिकारियों के साथ कैप्टन ह्यूरोज की सेना ने हरा दिया और जॉन मेल्कम ने उन्हे गिरफ्तार कर लिया तथा अगले ही दिन सभी बंदियों के साथ कामदास खां को राहतगढ़ के किले के मुख्य द्वार पर फाँसी पर लटका दिया।[29] इस तरह जो क्रांति की चिंगारी बैरसिया में भड़की थी, वह अंतिम रूप से बुझ गई।

संदर्भ एवं टिप्पणियाँ

1 भोपाल स्टेट गजेटियर, भाग–3, डायरेक्टोरेट ऑफ राजभाषा एण्ड कल्चर, म. प्र. भोपाल, पुनर्मुद्रण, 1995, पृ. 92

2 एम. अतहर अली, दि ऑपरेट्स ऑफ अंपायर, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, देहली, 1985 पृ. 34, टेबिल न. 4

3 सरदार दोस्त मुहम्मद खाँ के वंशज अफगानिस्तान में तिराह के निवासी थे, जो 17 वीं शताब्दी में 1696 ई. में उत्तरप्रदेश के जलालाबाद आये थे। (शहरयार मुहम्मद खाँ, दि बेगम्स ऑफ भोपाल, वायवा बुक्स, पुनर्मुद्रण, 2008, पृ. 1–2)

4 भोपाल स्टेट गजेटियर, भाग–3, डायरेक्टोरेट ऑफ राजभाषा एण्ड कल्चर, म. प्र. भोपाल, पुनर्मुद्रण, 1995, पृ. 10

5 वही, पृ. 75

6 सी. यू. अत्चिसन, दि ट्रीटीस्, एन्गेजमेंट एण्ड सनद्स, भाग–4, भाग–1, कलकत्ता, पृ. 260–262

7 शहरयार खाँ, दि बेगम्स ऑफ भोपाल, वायवा बुक्स, पुनर्मुद्रण, 2008, पृ. 90

8 तराचंद, भारतीय स्वतंत्रता का इतिहास, भाग–3, पृ. 52

9 असदउल्ला खाँ, सिपाही बहादुर, स्वराज संस्थान संचालनालय, भोपाल, 2008 द्वितीय संस्करण, पृष्ठभूमि से

10 वही, पृष्ठभूमि से

11 राष्ट्रीय अभिलेखागार, भोपाल–पत्रावली 30, लाला रामदीन का पत्र रीजेंट बेगम को, 13 जुलाई 1857, पृ. 17

12 म्यूटिनी पेपर्स, फाईल नं. 27, पृ. 143–160, फाईल नं. 51, पृ. 37–48

13 गदर के कागजात की सूची, जिल्द–2

14 राष्ट्रीय अभिलेखागार, भोपाल, डिस्क्रिप्टिव रोल 2, पेज IV

15 वही, लाला रामदीन का पत्र रीजेंट बेगम को, 17 जुलाई 1857

16 वही, डिस्क्रिप्टिव रोल 2, पेज IV

17 वही, डिस्क्रिप्टिव रोल 2, पेज IV

18 अगरा–जागीर बैरसिया से उत्तर में लगभग 44 किलोमीटर है, जो वर्तमान में विदिशा जिल के अन्तर्गत है।

19 राष्ट्रीय अभिलेखागार, भोपाल, पत्रावली 42, निर्भय सिंह का पत्र रीजेंट बेगम को, 19 जुलाई 1857, पृ. 49

20 असदउल्ला खाँ, सिपाही बहादुर, स्वराज संस्थान संचालनालय, भोपाल, 2008 द्वितीय संस्करण, पृ. 16

21 राष्ट्रीय अभिलेखागार, भोपाल–डिस्क्रिप्टिव रोल 2, पृ. IV

22 असदउल्ला खाँ, सिपाही बहादुर, स्वराज संस्थान संचालनालय, भोपाल, 2008, द्वितीय संस्करण, पृ. 16–17

23 राष्ट्रीय अभिलेखागार, भोपाल–डिस्क्रिप्टिव रोल 3, पृ. II, और III

24 दोराहा, भोपाल रियासत के जिला निजामत–ए–मगरिब की एक तहसील थी। यह बैरसिया से पश्चिम में स्थित है। भोपाल स्टेट गजेटियर–पूर्वोक्त, पृ. 83। यह वही दोराहा है जहाँ पेशवा बजीराव प्रथम और निजाम के बीच 6 जनवरी 1738 ई. को प्रसिद्ध दोराई–सराय नामक संधि हुई थी। सीहोर–भोपाल जिला गजेटियर, पृ. 52,

25 वही, रीजेंट बेगम का 7 सितंबर 1857 का आदेश, पृ. 113,

26 वही, पत्रावली 36, बैरसिया के भवानी सिंह का पत्र 26 सितंबर 1857 को रीजेंट बेगम को, पृ. 139,

27 यह वर्तमान में पिपलिया–हस्नाबाद और हबीबगंज के नाम से जाना जाता है। बैरसिया से लगभग 5 किलोमीटर पश्चिम में बैरसिया– सीहोर–नरसिंहगढ़ मार्ग पर स्थित है।

28 राष्ट्रीय अभिलेखागार, भोपाल, नस्ती क्रमांक–54, पत्र दिनांक 8.11.1857

29 वही, डिस्क्रिप्टिव लिस्ट ऑफ म्यूटिनी पेपर्स, भाग–2, 1963, म्यूटिनी पेपर्स, फाईल न. 27, पृ. 73–74